दैनिक जागरण

वाराणसी, 18 मार्च, 2026

आध्यात्मिकता व आधुनिकता के संतुलन से ही वास्तविक विकास

कांफ्रेंस के समापन समारोह को संबोधित करते कुलपति प्रो. बिहारीलाल शर्मा • जागरण

जागरण संवाददाता, वाराणसी : स्कूल आफ मैनेजमेंट साइंसेज (एसएमएस) वाराणसी में आयोजित दो दिवसीय 13वीं अंतरराष्ट्रीय कान्फ्रेंस का समापन हो गया। 'आध्यात्मिकता, वैश्विक कल्याण, सततता और डिजिटल सजगता के लिए एक सिद्ध प्रतिमान' विषय पर रखा गया था।

मुख्य अतिथि संपूर्णानंद संस्कृत विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. बिहारी लाल शर्मा ने कहा कि आध्यात्मिकता और आधुनिकता के संतुलन से ही वास्तविक विकास संभव है। उन्होंने भारतीय ज्ञान परंपरा को रेखांकित करते हुए कहा कि आध्यात्मिकता भारत की आत्मा है। प्राचीन ग्रंथों में भारत को दिव्य भूमि बताया गया है, जहां 'सर्वे भवन्तु सुखिनः' का आदर्श सर्वोपरि है। ईशावास्योपनिषद का जिक्र करते हुए उन्होंने कहा कि प्रत्येक कण में ईश्वर ऊर्जा का वास है, जो आधुनिक विज्ञान से सिद्ध होता है। मानसिक तनाव के समाधान में भारतीय दर्शन उपयोगी है। संस्थान निदेशक प्रो. पीएन झा ने पारंपरिक मूल्यों को समकालीन संदर्भों में अपनाने पर जोर दिया।

दैनिक जागरण

वाराणसी, 18 मार्च, 2026

आध्यात्मिकता व आधुनिकता के संतुलन से ही वास्तविक विकास

कांफ्रेंस के समापन समारोह को संबोधित करते कुलपति प्रो. बिहारीलाल शर्मा • जागरण

जागरण संवाददाता, वाराणसी : स्कूल आफ मैनेजमेंट साइंसेज (एसएमएस) वाराणसी में आयोजित दो दिवसीय 13वीं अंतरराष्ट्रीय कान्फ्रेंस का समापन हो गया। 'आध्यात्मिकता, वैश्विक कल्याण, सततता और डिजिटल सजगता के लिए एक सिद्ध प्रतिमान' विषय पर रखा गया था।

मुख्य अतिथि संपूर्णानंद संस्कृत विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. बिहारी लाल शर्मा ने कहा कि आध्यात्मिकता और आधुनिकता के संतुलन से ही वास्तविक विकास संभव है। उन्होंने भारतीय ज्ञान परंपरा को रेखांकित करते हुए कहा कि आध्यात्मिकता भारत की आत्मा है। प्राचीन ग्रंथों में भारत को दिव्य भूमि बताया गया है, जहां 'सर्वे भवन्तु सुखिनः' का आदर्श सर्वोपरि है। ईशावास्योपनिषद का जिक्र करते हुए उन्होंने कहा कि प्रत्येक कण में ईश्वर ऊर्जा का वास है, जो आधुनिक विज्ञान से सिद्ध होता है। मानसिक तनाव के समाधान में भारतीय दर्शन उपयोगी है। संस्थान निदेशक प्रो. पीएन झा ने पारंपरिक मूल्यों को समकालीन संदर्भों में अपनाने पर जोर दिया।

दैनिक जागरण
inext
वाराणसी, 16 मार्च, 2026

300 प्रतिभागियों ने प्रस्तुत किये शोध पत्र

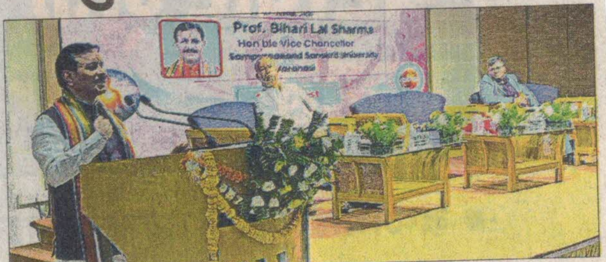

VARANASI (15 March): स्कूल ऑफ मैनेजमेंट साइंसेज द्वारा आयोजित आध्यात्मिकताः वैश्विक कल्याण, सततता और डिजिटल सजगता के लिए एक सिद्ध प्रतिमान विषयक तेरहवें अंतरराष्ट्रीय कॉन्फ्रेंस का समापन हुआ. समापन सत्र में बतौर मुख्य अतिथि उपस्थित संपूर्णानंद संस्कृत विश्वविद्यालय, वाराणसी के कुलपति प्रो. बिहारी लाल शर्मा ने कहा कि आध्यात्मिकता भारत की आत्मा में निहित है. मुख्य अतिथि का स्वागत करते हुए संस्थान के निदेशक प्रो. पीएन झा ने कहा कि आज के समय में जब तकनीकी प्रगति और डिजिटल विस्तार ने मानव जीवन को नई दिशा दी है. अंतरराष्ट्रीय कॉन्फ्रेंस के दूसरे दिन प्लेनरी सत्र का आयोजन हुआ जिसमे गोवा से अध्यात्मिक शोधकर्ता शॉन क्लार्क एवं दुबई से बोधि शुद्धानंद ब्रह्मचारी, संस्थापक, लोक नाथ डीवाइन लाइफ मिशन सम्मिलित हुए. इसी क्रम में चौदह अलग अलग तकनीकी सत्रों व पांच ऑनलाइन सत्रों का आयोजन भी हुआ. जिसमें ऑस्ट्रेलिया, दुबई, कैनेडा, ओमान, बंगलादेश और नेपाल सहित देश के कोने-कोने से आये लगभग 300 प्रतिभागियों ने शोध-पत्र प्रस्तुत किया.

अमर उजाला

वाराणसी | बुधवार, 18 मार्च 2026

आध्यात्मिकता-आधुनिकता के संतुलन से विकास संभव

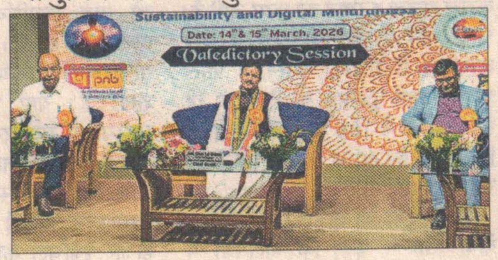

वाराणसी (वि)। स्कूल आफ मैनेजमेंट साइंसेज(एसएमएस) में आयोजित इंटरनेशनल कॉन्फ्रेंस के समापन समारोह में संपूर्णानंद संस्कृत विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. बिहारी लाल शर्मा ने कहा कि अध्यात्मिकता भारत की आत्मा में निहित है। यह केवल एक दार्शनिक विचार नहीं बल्कि देश की सांस्कृतिक चेतना और जीवन पद्धति का मूल आधार है। कुलपति ने आध्यात्मिकता और वैश्विक कल्याण विषय पर सेमिनार को उपयोगी बताया। अतिथियों का स्वागत संस्थान के निदेशक प्रो. पीएन झास ने किया। इस दौरान प्रो. पल्लवी पाठक, प्रो. अमिताभ पांडेय, डॉ.एमपी सिंह मौजूद रहे।

हिन्दुस्तान
वाराणसी, सोमवार, 16 मार्च 2026

स्कूल ऑफ मैनेजमेंट साइंसेज में हुई संगोष्ठी

वाराणसी। स्कूल ऑफ मैनेजमेंट साइंसेज की ओर से आध्यात्मिकता : वैश्विक कल्याण, सततता और डिजिटल सजगता के लिए एक सिद्ध प्रतिमान विषयक अंतरराष्ट्रीय संगोष्ठी रविवार को समाप्त हुई। समापन सत्र के मुख्य अतिथि संस्कृत विवि के कुलपति प्रो.बिहारी लाल शर्मा रहे। स्वागत संस्थान के निदेशक प्रो.पीएन. झा ने किया। दूसरे दिन प्लेनरी सत्र में गोवा से अध्यात्मिक शोधकर्ता शॉन क्लार्क एवं दुबई से बोधि शुद्धानंद ब्रह्मचारी सम्मिलित हुए।

आज
वाराणसी, १६ मार्च, २०२६

भारत की आत्मा में निहित है आध्यात्मिकता- वाइसचांसलर प्रोफेसर बिहारी लाल शर्मा

संपूर्णानंद संस्कृत विश्वविद्यालय के वाइसचांसलर प्रोफेसर बिहारी लाल शर्मा ने कहा कि आध्यात्मिकता भारत की आत्मा में निहित है। यह केवल एक दार्शनिक विचार नहीं, बल्कि इस देश की सांस्कृतिक चेतना और जीवन-पद्धति का मूल आधार है। रविवार को स्कूल ऑफ मैनेजमेंट साइंसेज की ओर से आयोजित आध्यात्मिकता- वैश्विक कल्याण, सततता और डिजिटल सजगता के लिए एक सिद्ध प्रतिमान विषयक तेरहवें अंतरराष्ट्रीय कॉन्फ्रेंस का समापन पर बतौर मुख्य अतिथि उन्होंने कहा कि हमारे प्राचीन ग्रंथों में भी इस भूमि की महत्ता का उल्लेख मिलता है। विष्णु पुराण में वर्णित है कि जो भूभाग समुद्र के उत्तर और हिमालय के दक्षिण में स्थित है, वही भारतवर्ष है। यह केवल भौगोलिक सीमा नहीं, बल्कि एक ऐसी दिव्य भूमि है जहाँ ज्ञान, साधना और मानव कल्याण की परंपरा निरंतर प्रवाहित होती रही है।मुख्य अतिथि का स्वागत करते हुए संस्थान के निदेशक प्रोफेसर पीएन झा ने सम्मेलन के दो

दिनों के सफल आयोजन का उल्लेख किया। अंतरराष्ट्रीय कॉन्फ्रेंस के दूसरे दिन प्लेनरी सत्र का आयोजन हुआ, जिसमें गोवा से अध्यात्मिक शोधकर्ता शॉन क्लार्क एवं दुबई से बोधि शुद्धानंद ब्रह्मचारी, संस्थापक, लोक नाथ डीवाइन लाइफ मिशन सम्मिलित हुए 7 इसी क्रम में चौदह अलग अलग तकनीकी सत्रों और पांच ऑनलाइन सत्रों का आयोजन भी हुआ । जिसमें ऑस्ट्रेलिया, दुबई, कैनेडा,ओमान, बंगलादेश और नेपाल सहित देश के कोने-कोने से आये लगभग 300 प्रतिभागियों ने शोध-पत्र प्रस्तुत किया।संचालन सह-संयोजक प्रोफेसर पल्लवी पाठक और धन्यवाद ज्ञापन कॉन्फ्रेंस के समन्वयक प्रोफेसर अमिताभ पांडेय ने किया। इस अवसर पर एसएमएस के अधिशासी सचिव डॉक्टर एमपी सिंह, निदेशक प्रोफेसर पीएन झा, रजिस्टर संजय गुप्ता, प्रोफेसर अविनाश चंद्र सुपकर प्रोफेसर संदीप सिंह सहित समस्त अध्यापक और कर्मचारी गण उपस्थित रहे ।

जन के साथ-सच के साथ
जनवार्ता
वाराणसी, सोमवार, 16 मार्च, 2026

विकास आध्यात्मिकता और आधुनिकता के संतुलन से ही संभव : कुलपति बीएल शर्मा

एसएमएस में दो दिनी अंतरराष्ट्रीय कॉन्फ्रेंस में देश-विदेश से आये लगभग 300 प्रतिभागियों ने प्रस्तुत किये अपने-अपने शोध पत्र

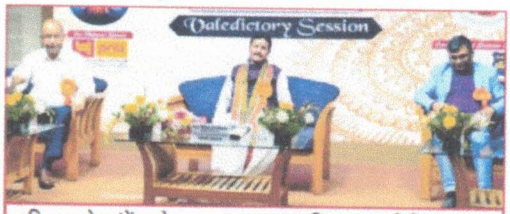

रविवार को कांफ्रेंस के समापन पर कुलपति व अन्य विशिष्टजन।

वाराणसी (जनवार्ता)। स्कूल ऑफ मैनेजमेंट साइंसेज द्वारा आयोजित आध्यात्मिकताः वैश्विक कल्याण, सततता और डिजिटल सजगता के लिए एक सिद्ध प्रतिमान विषयक तेरहवें अंतरराष्ट्रीय कॉन्फ्रेंस के समापन पर मुख्य अतिथि संपूर्णानंद संस्कृत विवि के कुलपति प्रो. बिहारी लाल शर्मा ने कहा कि आध्यात्मिकता भारत की आत्मा में निहित है। यह केवल एक दार्शनिक विचार नहीं, बल्कि इस देश की सांस्कृतिक चेतना और जीवन-पद्धति का मूल आधार है।

उन्होंने कहा कि विज्ञान जितना आगे बढ़ेगा, उतना ही हमारे शास्त्रों की प्रासंगिकता और प्रमाणिकता पुष्ट होती जाएगी। जब आध्यात्मिकता और आधुनिकता का संतुलित समन्वय होगा, तभी वास्तविक विकास संभव हो सकेगा।

मुख्य अतिथि का स्वागत करते हुए संस्थान के निदेशक प्रो. पीएन झा ने सम्मेलन के दो दिनों के सफल आयोजन का उल्लेख करते हुए कहा कि आज के समय में जब तकनीकी प्रगति और डिजिटल विस्तार ने मानव जीवन को नई दिशा दी है। हम अपने पारंपरिक ज्ञान और आध्यात्मिक मूल्यों को भी उतनी ही गंभीरता से समझें और उन्हें समकालीन संदर्भों में प्रस्तुत करें। उन्होंने कहा कि भारतीय चिंतन परंपरा सदैव से संतुलन, सह-अस्तित्व और मानव कल्याण के मूल्यों पर आधारित रही है।

अंतरराष्ट्रीय कॉन्फ्रेंस के दूसरे दिन प्लेनरी सत्र का आयोजन हुआ जिसमे गोवा से अध्यात्मिक शोधकर्ता शॉन क्लार्क एवं दुबई से बोधि शुद्धानंद ब्रह्मचारी, संस्थापक, लोक नाथ डीवाइन लाइफ मिशन सम्मिलित हुए` इसी क्रम में चौदह अलग अलग तकनीकी सत्रों व पांच ऑनलाइन सत्रों का आयोजन भी हुआ। जिसमें ऑस्ट्रेलिया, दुबई, कैनेडा, ओमान, बंगलादेश और नेपाल सहित देश के कोने-कोने से आये लगभग 300 प्रतिभागियों ने शोध-पत्र प्रस्तुत किया।

समापन सत्र का संचालन सह-संयोजक प्रो. पल्लवी पाठक व धन्यवाद ज्ञापन कॉन्फ्रेंस के समन्वयक प्रो. अमिताभ पांडेय ने दिया। दो दिवसीय अंतर्राष्ट्रीय कॉन्फ्रेंस की विस्तृत रिपोर्ट प्रोफेसर अविनाश चंद्र सुपकर ने प्रस्तुत की। इस अवसर पर एसएमएस के अधिशासी सचिव डॉ. एमपी सिंह, निदेशक प्रो. पीएन झा, कुलसचिव संजय गुप्ता, प्रो. संदीप सिंह सहित समस्त अध्यापक और कर्मचारी उपस्थित रहे।

पायनियर

सोमवार, 16 मार्च 2026

आध्यात्मिकता और आधुनिकता के संतुलन से ही संभव है वास्तविक विकासः कुलपति

पायनियर संवाददाता। वाराणसी

❖ एसएमएस, वाराणसी में आयोजित दो दिवसीय अंतरराष्ट्रीय कॉन्फ्रेंस का हुआ समापन

स्कूल ऑफ मैनेजमेंट साइंसेज द्वारा आयोजित आध्यात्मिकताः वैश्विक कल्याण, सततता और डिजिटल सजगता के लिए एक सिद्ध प्रतिमान विषयक तेरहवें अंतरराष्ट्रीय कॉन्फ्रेंस का समापन हुआ ।

समापन सत्र में बतौर मुख्य अतिथि उपस्थित संपूर्णानंद संस्कृत विश्वविद्यालय, वाराणसी के कुलपति प्रो. बिहारी लाल शर्मा ने कहा कि आध्यात्मिकता भारत की आत्मा में निहित है। यह केवल एक दार्शनिक विचार नहीं, बल्कि इस देश की सांस्कृतिक चेतना और जीवन-पद्धति का मूल आधार है। उन्होंने कहा कि हमारे प्राचीन ग्रंथों में भी इस भूमि की महत्ता का उल्लेख मिलता है। विष्णु पुराण में वर्णित है कि जो भूभाग समुद्र के उत्तर और हिमालय के दक्षिण में स्थित है, वही भारतवर्ष है। यह केवल भौगोलिक सीमा नहीं, बल्कि एक ऐसी दिव्य भूमि है जहाँ ज्ञान, साधना और मानव कल्याण की परंपरा निरंतर प्रवाहित होती रही है प्रो. शर्मा ने कहा कि इस पवित्र भूमि में जन्म लेने वाला व्यक्ति साधारण नहीं होता। 'भा' का अर्थ है प्रकाश और 'रत' का अर्थ है उसमें लीन होना। अर्थात जो व्यक्ति ज्ञान, प्रकाश और सरस्वती की उपासना में सतत लीन रहता है, वही सच्चे अर्थों में भारतीय है। ऐसे व्यक्तियों द्वारा की गई सृजनात्मकता और चिंतन केवल व्यक्तिगत लाभ के लिए नहीं, बल्कि वैश्विक कल्याण के लिए होता है। यही कारण है कि भारत की चिंतन परंपरा सदैव ''सर्वे भवन्तु सुखिनः'' के आदर्श को सामने रखती है, जहाँ केवल अपने ही नहीं बल्कि समस्त विश्व के कल्याण की कामना की जाती है।

मुख्य अतिथि का स्वागत करते हुए संस्थान के निदेशक प्रो॰ पी॰ एन॰ झा ने सम्मेलन के दो दिनों के सफल आयोजन का उल्लेख करते हुए कहा कि आज के समय में जब तकनीकी प्रगति और डिजिटल विस्तार ने मानव जीवन को नई दिशा दी है । अंतरराष्ट्रीय कॉन्फ्रेंस के दूसरे दिन प्लेनरी सत्र का आयोजन हुआ जिसमे गोवा से अध्यात्मिक शोधकर्ता शॉन क्लार्क एवं दुबई से बोधि शुद्धानंद ब्रह्मचारी, संस्थापक, लोक नाथ डीवाइन लाइफ मिशन सम्मिलित हुए इसी क्रम में चौदह अलग अलग तकनीकी सत्रों व पांच ऑनलाइन सत्रों का आयोजन भी हुआ। जिसमें ऑस्ट्रेलिया, दुबई, कैनेडा, ओमान, बंगलादेश और नेपाल सहित देश के कोने-कोने से आये लगभग 300 प्रतिभागियों ने शोध-पत्र प्रस्तुत किया। समापन सत्र का संचालन सह-संयोजक प्रो॰ पल्लवी पाठक व धन्यवाद ज्ञापन कॉन्फ्रेंस के समन्वयक प्रो॰ अमिताभ पांडेय ने दिया। दो दिवसीय अंतर्राष्ट्रीय कॉन्फ्रेंस की विस्तृत रिपोर्ट प्रोफेसर अविनाश चंद्र सुपकर ने प्रस्तुत की।

काशीवार्ता

वाराणसी, 16 मार्च, 2026

एसएमएस में अंतरराष्ट्रीय कॉन्फ्रेंस का समापन

वाराणसी **(काशीवार्ता)**। स्कूल ऑफ मैनेजमेंट साइंसेज (एसएमएस) में आयोजित आध्यात्मिकताः वैश्विक कल्याण, सततता और डिजिटल सजगता के लिए एक सिद्ध प्रतिमान विषयक तेरहवें अंतरराष्ट्रीय कॉन्फ्रेंस का रविवार को समापन हो गया। दो दिवसीय सम्मेलन के समापन सत्र में मुख्य अतिथि संपूर्णानंद संस्कृत विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. बिहारी लाल शर्मा ने कहा कि आध्यात्मिकता भारत की आत्मा में निहित है और यही हमारी सांस्कृतिक चेतना व जीवन पद्धति का मूल आधार है। उन्होंने कहा कि भारतीय दर्शन और प्राचीन ग्रंथों में मानव कल्याण की जो अवधारणा दी गई है, वह आज भी विश्व के लिए मार्गदर्शक है। संस्थान के निदेशक प्रो. पी.एन. झा ने कहा कि तकनीकी प्रगति और डिजिटल विस्तार के इस युग में पारंपरिक ज्ञान और आध्यात्मिक मूल्यों को समझना और उन्हें समकालीन संदर्भों में प्रस्तुत करना अत्यंत आवश्यक व महत्वपूर्ण है। सम्मेलन के दौरान 14 तकनीकी सत्रों और 5 ऑनलाइन सत्रों का आयोजन किया गया, जिसमें विभिन्न देशों से आए लगभग 300 प्रतिभागियों ने अपने शोध पत्र प्रस्तुत किए।

ज्ञानशिखा टाइम्स

वाराणसी । सोमवार । 16 मार्च, 2026

आध्यात्मिकता और आधुनिकता के संतुलन से ही संभव है वास्तविक विकास-कुलपति प्रो. बिहारी लाल शर्मा

एस0एम0एस0, वाराणसी में आयोजित दो दिवसीय अंतरराष्ट्रीय कॉन्फ्रेंस का हुआ समापन

वाराणसी, । : स्कूल ऑफ मैनेजमेंट साइंसेज द्वारा आयोजित "आध्यात्मिकता: वैश्विक कल्याण, सततता और डिजिटल सजगता के लिए एक सिद्ध प्रतिमान विषयक तेरहवें अंतरराष्ट्रीय कॉन्फ्रेंस का समापन हुआ । समापन सत्र में बतौर मुख्य अतिथि उपस्थित संपूर्णानंद संस्कृत विश्वविद्यालय, वाराणसी के कुलपति प्रो. बिहारी लाल शर्मा ने कहा कि आध्यात्मिकता भारत की आत्मा में निहित है। यह केवल एक दार्शनिक विचार नहीं, बल्कि इस देश की सांस्कृतिक चेतना और जीवन-पद्धति का मूल आधार है। उन्होंने कहा कि हमारे प्राचीन ग्रंथों में भी इस भूमि की महत्ता का उल्लेख मिलता है। विष्णु पुराण में वर्णित है कि जो भूभाग समुद्र के उत्तर और हिमालय के दक्षिण में स्थित है, वही भारतवर्ष है। यह केवल भौगोलिक सीमा नहीं, बल्कि एक ऐसी दिव्य भूमि है जहाँ ज्ञान, साधना और मानव कल्याण की परंपरा निरंतर प्रवाहित होती रही है।प्रो. शर्मा ने कहा कि इस पवित्र भूमि में जन्म लेने वाला व्यक्ति साधारण नहीं होता। 'भा' का अर्थ है प्रकाश और 'रत' का अर्थ है उसमें लीन होना। अर्थात जो व्यक्ति ज्ञान, प्रकाश और सरस्वती की उपासना में सतत लीन रहता है, वही सच्चे अर्थों में भारतीय है। ऐसे व्यक्तियों द्वारा की गई सृजनात्मकता और चिंतन केवल व्यक्तिगत लाभ के लिए नहीं, बल्कि वैश्विक कल्याण के लिए होता है। यही कारण है कि भारत की चिंतन परंपरा सदैव सर्वे भवन्तु सुखिनः के आदर्श को सामने रखती है, जहाँ केवल अपने ही नहीं बल्कि समस्त विश्व के कल्याण की कामना की जाती है।प्रो. शर्मा ने ईशावास्योपनिषद का उल्लेख करते हुए कहा कि भारतीय ऋषियों ने हजारों वर्ष पूर्व यह उद्घोष किया था कि इस संसार के प्रत्येक कण में ईश्वर का वास है। आधुनिक विज्ञान ने भी जब यह सिद्ध किया कि प्रत्येक कण में ऊर्जा निहित होती है, तो हमारे प्राचीन ज्ञान की पुष्टि हुई, जिसे आधुनिक विज्ञान ने गॉड पार्टिकल जैसे नामों से संबोधित किया। उन्होंने कहा कि विज्ञान जितना आगे बढ़ेगा, उतना ही हमारे शास्त्रों की

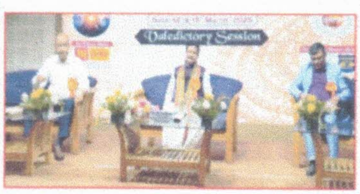

प्रासंगिकता और प्रमाणिकता पुष्ट होती जाएगी। उन्होंने कहा कि आज विश्व में जो मानसिक तनाव और असंतुलन की समस्या बढ़ रही है, उसका समाधान भारत की ज्ञान परंपरा में निहित है। भारतीय दर्शन हमें यह सिखाता है कि आधुनिकतम ज्ञान को अपनाते हुए भी हमें अपनी मूल सांस्कृतिक धारा से जुड़े रहना चाहिए। जब आध्यात्मिकता और आधुनिकता का संतुलित समन्वय होगा, तभी वास्तविक विकास संभव हो सकेगा।मुख्य अतिथि का स्वागत करते हुए संस्थान के निदेशक प्रो0 पी0 एन0 झा ने सम्मेलन के दो दिनों के सफल आयोजन का उल्लेख करते हुए कहा कि आज के समय में जब तकनीकी प्रगति और डिजिटल विस्तार ने मानव जीवन को नई दिशा दी है7 हम अपने पारंपरिक ज्ञान और आध्यात्मिक मूल्यों को भी उतनी ही गंभीरता से समझें और उन्हें समकालीन संदर्भों में प्रस्तुत करें। उन्होंने कहा कि भारतीय चिंतन परंपरा सदैव से संतुलन, सह-अस्तित्व और मानव कल्याण के मूल्यों पर आधारित रही है और यही मूल्य आज के वैश्विक समाज के लिए मार्गदर्शक सिद्ध हो सकते हैं। अंतरराष्ट्रीय कॉन्फ्रेंस के दूसरे दिन प्लेनरी सत्र का आयोजन हुआ जिसमे गोवा से अध्यात्मिक शोधकर्ता शॉन क्लार्क एवं दुबई से बोधि शुद्धानंद ब्रह्मचारी, संस्थापक, लोक नाथ डीवाइन लाइफ मिशन सम्मिलित हुए 7 इसी क्रम में चौदह अलग अलग तकनीकी सत्रों व पांच ऑनलाइन सत्रों का आयोजन भी हुआ । जिसमें ऑस्ट्रेलिया, दुबई, कैनेडा,ओमान, बंगलादेश और नेपाल सहित देश के कोने-कोने से आये लगभग 300 प्रतिभागियों ने शोध-पत्र प्रस्तुत किया । समापन सत्र का संचालन सह-संयोजक प्रो0 पल्लवी पाठक व धन्यवाद ज्ञापन कॉन्फ्रेंस के समन्वयक प्रो0 अमिताभ पांडेय ने दिया। दो दिवसीय अंतर्राष्ट्रीय कॉन्फ्रेंस की विस्तृत रिपोर्ट प्रोफेसर अविनाश चंद्र सुपकर ने प्रस्तुत की। इस अवसर पर एस0एम0 एस0 वाराणसी के अधिशासी सचिव डॉ0 एम0 पी0 सिंह, निदेशक प्रो0 पी0 एन0 झा, कुलसचिव श्री संजय गुप्ता, प्रो0 संदीप सिंह सहित समस्त अध्यापक और कर्मचारी गण उपस्थित रहे ।

Wednesday Times
National News paper
16-03-2026

Real Development Possible Only Through Balance Between Spirituality and Technological Advancement: Prof. Bihari Lal Sharma

Sushil Mishra
WednesdayTimes

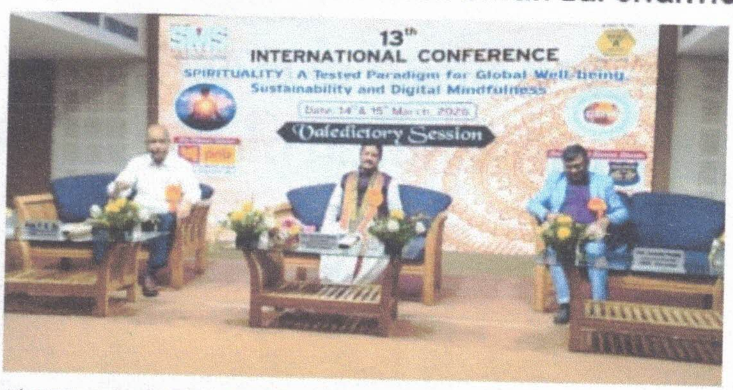

Varanasi The 13th International Conference on "Spirituality: A Proven Paradigm for Global Well-being, Sustainability and Digital Mindfulness" organized by the School of Management Sciences Varanasi concluded today.Addressing the valedictory session as the Chief Guest, Bihari Lal Sharma, Vice-Chancellor of Sampurnanand Sanskrit University, Varanasi, said that spirituality lies at the very core of India's soul. It is not merely a philosophical concept but the fundamental basis of the country's cultural consciousness and way of life. He noted that the significance of this land has also been mentioned in ancient scriptures. Citing the Vishnu Purana, he said that the region located north of the ocean and south of the Himalayas is known as Bharatvarsha, which represents not just a geographical territory but a sacred land where traditions of knowledge, spiritual practice and human welfare have flourished for centuries.Prof. Sharma further explained that a person born on this sacred land carries a special responsibility. He elaborated that the word Bharat derives from "Bha," meaning light, and "Rat," meaning one who is devoted to it.Referring to the Isha Upanishad, he stated that Indian sages proclaimed thousands of years ago that the divine resides in every particle of the universe. Modern science, by discovering that energy exists in every particle, has in many ways validated the wisdom of ancient knowledge traditions, sometimes referred to in modern terms as the "God Particle." He observed that as science advances, the relevance and authenticity of ancient Indian scriptures will become even more evident.Welcoming the Chief Guest, P. N. Jha, Director of the School of Management Sciences Varanasi, highlighted the successful organization of the two-day conference. He stated that in an era where technological progress and digital expansion are reshaping human life, it is equally important to understand traditional knowledge and spiritual values and present them in contemporary contexts. He added that the Indian intellectual tradition has always been rooted in balance, coexistence and human welfare—values that can guide the global community today. On the second day of the conference, a plenary session was organized featuring spiritual researcher Sean Clark from Goa and Bodhi Shuddhananda Brahmachari, Founder of the Lok Nath Divine Life Mission, Dubai. In addition, fourteen technical sessions and five online sessions were conducted. Nearly 300 participants from Australia, Dubai, Canada, Oman, Bangladesh, Nepal and various parts of India presented their research papers. The valedictory session was conducted by Co-Convener Prof. Pallavi Pathak, while the vote of thanks was delivered by Conference Coordinator Prof. Amitabh Pandey. A detailed report of the two-day international conference was presented by Prof. Avinash Chandra Supkar. The event was attended by Executive Secretary Dr. M. P. Singh, Director Prof. P. N. Jha, Registrar Mr. Sanjay Gupta, Prof. Sandeep Singh, along with faculty members and staff of the School of Management Sciences Varanasi.

हिन्दी दैनिक
https://samachar-bharat.com:
आजादी अभिव्यक्ति की
समाचार भारत
लखनऊ से प्रकाशित
Email-samacharbharatgzp@gmail.com
16 मार्च 2026

आध्यात्मिकता और आधुनिकता के संतुलन से ही संभव है वास्तविक विकासः कुलपति प्रो. बिहारी लाल शर्मा

समाचार भारत ,युसूफ खान

वाराणसी। स्कूल ऑफ मैनेजमेंट साइंसेज द्वारा आयोजित आध्यात्मिकताः वैश्विक कल्याण, सततता और डिजिटल सजगता के लिए एक सिद्ध प्रतिमान विषयक तेरहवें अंतरराष्ट्रीय कॉन्फ्रेंस का समापन हुआ । समापन सत्र में बतौर मुख्य अतिथि उपस्थित संपूर्णानंद संस्कृत विश्वविद्यालय, वाराणसी के कुलपति प्रो. बिहारी लाल शर्मा ने कहा कि आध्यात्मिकता भारत की आत्मा में निहित है। यह केवल एक दार्शनिक विचार नहीं, बल्कि इस देश की सांस्कृतिक चेतना और जीवन-पद्धति का मूल आधार है। प्रो. शर्मा ने कहा कि इस पवित्र भूमि में जन्म लेने वाला व्यक्ति साधारण नहीं होता। 'भा' का अर्थ है प्रकाश और 'रत' का अर्थ है उसमें लीन होना। अर्थात जो व्यक्ति ज्ञान,

प्रकाश और सरस्वती की उपासना में सतत लीन रहता है, वही सच्चे अर्थों में भारतीय है। ऐसे व्यक्तियों द्वारा की गई सृजनात्मकता और चिंतन केवल व्यक्तिगत लाभ के लिए नहीं, बल्कि वैश्विक कल्याण के लिए होता है। प्रो. शर्मा ने ईशावास्योपनिषद का उल्लेख करते हुए कहा कि भारतीय ऋषियों ने हजारों वर्ष पूर्व यह उद्घोष किया था कि इस संसार के प्रत्येक कण में ईश्वर का वास है।

मुख्य अतिथि का स्वागत करते हुए संस्थान के निदेशक प्रो॰ पी॰ एन॰ झा ने सम्मेलन के दो दिनों के सफल आयोजन का उल्लेख करते हुए कहा कि आज के समय में जब तकनीकी प्रगति और डिजिटल विस्तार ने मानव जीवन को नई दिशा दी है। अंतरराष्ट्रीय कॉन्फ्रेंस के दूसरे दिन प्लेनरी सत्र का आयोजन हुआ जिसमे गोवा से अध्यात्मिक शोधकर्ता शॉन क्लार्क एवं दुबई से

» एस0एम0एस0, वाराणसी में आयोजित दो दिवसीय अंतरराष्ट्रीय कॉन्फ्रेंस का हुआ समापन

बोधि शुद्धानंद ब्रह्मचारी, संस्थापक, लोक नाथ डीवाइन लाइफ मिशन सम्मिलित हुए। समापन सत्र का संचालन सह-संयोजक प्रो॰ पल्लवी पाठक व धन्यवाद ज्ञापन कॉन्फ्रेंस के समन्वयक प्रो॰ अमिताभ पांडेय ने दिया। दो दिवसीय अंतर्राष्ट्रीय कॉन्फ्रेंस की विस्तृत रिपोर्ट प्रोफेसर अविनाश चंद्र सुपकर ने प्रस्तुत की। इस अवसर पर एस॰एम॰ एस॰ वाराणसी के अधिशासी सचिव डॉ॰ एम॰ पी॰ सिंह, निदेशक प्रो॰ पी॰ एन॰ झा, कुलसचिव श्री संजय गुप्ता, प्रो॰ संदीप सिंह सहित समस्त अध्यापक और कर्मचारी गण उपस्थित रहे ।